करना पड़ेगा यानि समाज को जागृत करना पड़ेगा। समाज को संगठित करना पड़ेगा। राजनैतिक राष्ट्रवाद की उपेक्षा करते हुए चलना पड़ेगा। और इसलिए हम लोग भारत के अन्दर तो प्रयास करते ही हैं। मैं कभी-कभी सोचता हूं कि इतने सारे देवी देवता होने के बाद भी ये भारत माता की जय कहां से आ गया। ये अगर हम देखेंगे तो 1857 के पहले शायद ये नारा नहीं था। यह तो जब देश के अन्दर स्वतंत्रता आन्दोलन शुरू हुआ, इस आन्दोलन में एक राजनैतिक राष्ट्रवाद को समाप्त करते हुए फिर एक बार भारत को खड़ा करना है। जब यह भाव मन के अन्दर आया होगा तो किसी न किसी के दिमाग से निकला कि एक ही मार्ग है भारत माता की जय कहने के लिए बताओ। सारे समाज के सामने ये विषय रखा गया। स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि आने वाले दो सौ, ढाई सौ, चार सौ वर्षों तक सारे अपने देवी-देवताओं को कपड़े में बांधकर रख दो। एक ही देवता का पूजन करो। वह देवता है भारत माता। ये है भारत माता जी जय। भारत माता की जय का यह भाव जितना पुष्ट होता जाएगा उतना सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जागृत होगा और पुष्ट भी होगा। कोई भी मजहब के आधार पर, सम्प्रदाय के आधार पर, राजनैतिक दृष्टि से आज हावी हुआ लगता है। लेकिन इससे मुक्त होने का मार्ग इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को ही जागृत करने की आवश्यकता है। और इसलिए भारत माता की जय। भारत माता को ही देवता मानना।

बंकिमचन्द्र चटर्जी ने जब वन्दे मातरम लिखा। आनंन्द मठ में जब वन्देमातरम आया। किस मातृभूमि को वन्दना करने की बात कही गयी। इस मातृभूमि की वन्दना करते-करते इस मातृभूमि के प्रति, इस भूमि के प्रति, यहां की संस्कृति के प्रति, यहां के मूल्यों के प्रति श्रेष्ठ भाव का मन के अन्दर जागरण होगा, वही शक्ति के रूप में वन्देमातरम का महत्व है। और इसलिए इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बलवान करने के लिए, इस भाव को पुष्ट करने के लिए जो-जो भी प्रयत्न चल रहे हैं यही सही दृष्टिकोण विकसित करना। कभी कभी लगता है कि लोग भारत माता की जय करने का विरोध क्यों करते हैं। विरोध वही करते हैं तो इस भूमि को मां नहीं मानते, विरोध वही करते हैं जिन्होंने इस भूमि को भोगभूमि माना, विरोध वही करते हैं जिनके मन में हम आक्रामक हैं, हम बाहर से आए हुए हैं, हमने विजय प्राप्त की है ऐसा सोचने वाली प्रवृतियां ही भारत माता की जय करने का विरोध करती हैं। और वह विरोध करने वाली आज की जो शक्तियां हैं वह एक भी